संस्कृत विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली

एवं

भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय सङ्गोष्ठी

# संस्कृत के बहुआयामी पक्ष एवं बृहत्तर विश्व

(Multi Dimensional Aspects of Sanskrit & Larger World)

**१५-१७ फरवरी, २०१९**

**"अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः ।**
**यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥"** - ऋग्वेद १०.१२५.०५

वैश्विक मेधा को अपने स्वरूप द्वारा प्रकाशित करने वाली ऋतम्भरा वाणी संस्कृत सदैव ही अभिनन्दनीया रही है। आचार्य दण्डी का कथन **"इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयं । यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारान्न दीप्यते ॥"** (काव्यादर्श १.४)संस्कृत के सन्दर्भ में समीचीनता को ही द्योतित करता है। सहस्राब्दियों तक ऋषियों की सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक तथा राजनैतिक दृष्टि एवं ज्ञान को मूर्त रूप देने का श्रेय संस्कृत को ही जाता है। ज्ञान का ऐसा कोई क्षेत्र हमारे दृष्टिपथ से होकर नहीं गुजरता जो संस्कृत से स्नात या अभिषिक्त न हो। ज्ञान की प्रत्येक विधा के अनुरूप संस्कृत का बृहत्तर स्वरूप हमें उपनिषदीय **"इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते"**(बृहदारण्यक-उपनिषद् २.१.१) के रूप में स्फुटिकृत होता है। प्राचीनतमा होने के उपरान्त भी संस्कृत भाषा की सर्जनात्मकता कुण्ठित या अक्षम नहीं हुई अपितु संस्कृत के धातुपाठ नित्य-नवीन शब्दों को गढ़ने में सदैव ही समर्थ रहा है। अतएव विश्व की अन्य भाषाओं के साथ भी संस्कृत का अन्तः सम्बन्ध सहज ही प्राप्त होता है। संस्कृत भाषा प्राचीन अनुसन्धेताओं की भाषा होने के कारण विज्ञान के क्षेत्र में, कला की सशक्त अभिव्यक्ति के कारण कला के क्षेत्र में, वैश्विक नाट्य तथा शास्त्र के क्षेत्र में, सङ्गणकीय दक्षता के क्षेत्र में, विविध भाषाओं के सामञ्जस्य के क्षेत्र में तथा व्यष्टि-प्रबन्धन से लेकर समष्टि-प्रबन्धन तक इसका नैसर्गिक प्रवाह दृष्टिगत होता है। अतः संस्कृत के विविध आयामों में हमें बृहत्तर विश्व का साक्षात्कार प्राप्त होता है। इस सर्वतोन्मुखी वाङ्मय को धारण करने वाली संस्कृत की विश्व के प्राच्यविद्यानुरागी भी प्रशंसा करते हैं।

## संस्कृत विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया

जामिया मिल्लिया इस्लामिया की स्थापना वर्ष १९२० में हुई और भारतीय संसद के अधिनियम द्वारा १९८८ में केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया। जामिया में वर्ष २०१७ में संस्कृत विभाग की स्थापना हुई, स्थापना के प्रथम वर्ष में बी.ए.(आनर्स), एम.ए., एम.फिल., पी-एच.डी. तथा प्रमाणपत्र के पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये गए। विभाग ने आज की आवश्यकताओं एवं जामिया मिल्लिया इस्लामिया के विशिष्ट परिवेश को ध्यान में रखते हुए अपने पाठ्यक्रम में पारम्परिक विद्याओं के साथ-साथ प्रबन्धन, मीडिया, राजनीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र, सङ्गणकीय भाषाशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, संस्कृत का फ़ारसी आदि भाषाओं से अन्तःसम्बन्ध जैसे विषयों को शामिल किया है। इस सङ्गोष्ठी में देश के लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वानों द्वारा व्याख्यान तथा शोधपत्र प्रस्तुत किये जाएँगे, जिसके माध्यम से छात्रों में इन विषयों के प्रति अनुसन्धानात्मक रुचि उत्पन्न हो सके।

## सङ्गोष्ठी के मुख्य विषय एवं उप-विषय :

| मुख्य-विषय | उपविषय |
|---|---|
| **संस्कृत एवं प्रबन्धन** | रामायण, महाभारत, अर्थशास्त्र एवं स्मृतियों आदि में सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक प्रबन्धन |
| | भारतीय दार्शनिक परम्परा एवं प्रबन्धन |
| **संस्कृत एवं दर्शनशास्त्र** | वेदान्त दर्शन की सार्वभौमिकता |
| | बदलते मूल्य एवं भारतीय दर्शन |
| | न्याय दर्शन की परम्परा में मेधा परीक्षण |
| | विभिन्न दार्शनिक परम्पराओं में कर्मसिद्धान्त, ज्ञानसिद्धान्त, लोकजीवन, प्रमाण मीमांसा,आचार व्यवस्था, मनोविज्ञान, शिक्षा दर्शन |
| | भारतीय दार्शनिक परम्परा एवं अर्वाचीन सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक दर्शन-चिन्तक(गाँधी, टैगोर, विवेकानन्द, अरविन्द, अम्बेडकर इत्यादि) |
| **वैदिक ज्ञान परम्परा** | वैदिक वाङ्मय में देवत्व की अवधारणा |
| | सृष्ट्युत्पत्ति सिद्धान्त |
| | पर्यावरण की वैदिक अवधारणा एवं संधारणीय(Sustainable) विकास |
| | उपनिषदों में सन्निहित सामाजिक अवधारणाएँ |
| **संस्कृत एवं भारतीय रङ्गमञ्च** | भारतीय नाट्यशास्त्र परम्परा, नाट्यधर्मी एवं लोकधर्मी प्रवृत्तियां |
| | आधुनिक रङ्गमञ्च |
| | नाट्यशास्त्रीय तत्त्वों का आधुनिक चलचित्रों में अनुप्रयोग |
| | वैश्विक परिदृश्य में नाट्यशास्त्र |
| **संस्कृत एवं अन्य भाषायें** | संस्कृत के साथ अरबी, फारसी, उर्दू आदि भाषाओं का अन्तः सम्बन्ध, अनुवाद कार्य एवं उनकी समीचीनता |
| | विविध भाषाओं की विकास परम्परा एवं संस्कृत |
| **आधुनिक संस्कृत साहित्य** | आधुनिक संस्कृत साहित्य में आधुनिकता विमर्श |
| | आधुनिक संस्कृत साहित्य में नायक एवं नायिका की अवधारणा |
| | आधुनिक संस्कृत साहित्य में अङ्गी-रस, छन्दादि विषयक नवाचार |
| **संस्कृत एवं मीडिया** | संस्कृत मीडिया का स्वरूप, संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ |
| | संस्कृत के प्रचार-प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका |
| **संस्कृत एवं विज्ञान** | संस्कृत का वैज्ञानिक पक्ष (ज्योतिष, वास्तु, आयुर्वेद, वैदिक गणित, मौसम विज्ञान, वैमानिकी इत्यादि के विशेष सन्दर्भ में) |
| **संस्कृत, समाज तथा संस्कृति** | संस्कृत ग्रंथों में निहित धर्म की अवधारणा, लोकजीवन, स्त्रियों का स्वरूप, सामाजिक व्यवस्था, मानवाधिकार, राजनैतिक व आर्थिक व्यवस्था इत्यादि |
| **संस्कृत एवं सङ्गणकीय भाषाविज्ञान** | ई-लर्निंग एवं सङ्गणकीय संस्कृत, संस्कृत एवं सङ्गणकीय भाषाएँ , ई-कार्पोरा |

## पञ्जीकरण शुल्क

शोधच्छात्र: ५०० रूपये मात्र, प्राध्यापक: १००० रूपये मात्र

खाता सं. 30225479798 (जय प्रकाश नारायण), State Bank of India, Delhi Cantt, IFSC Code: SBIN0000733

पञ्जीकरण के लिए गूगल-फॉर्म लिंक

:https://docs.google.com/forms/d/1tQaLe0wfJJ5PeM-6pXrNJHoBTpEGeDSK3K0kQNckDKk/edit

कृपया पञ्जीकरण शुल्क जमा करने के पश्चात् भुगतान-रसीद की प्रति sanskritseminar@jmi.ac.in पर भेजें।

## शोध-पत्र आमन्त्रण

उपर्युक्त विषयों पर २०० शब्दों में शोध-सार ३१ जनवरी २०१९ तक एवं २५००-३००० शब्दों में पूर्ण शोधपत्र ०५ फरवरी २०१९ तक ई-मेल sanskritseminar@jmi.ac.in पर भेजे जा सकते हैं। सॉफ्ट-प्रति संस्कृत, हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में स्वीकार किये जाएँगें। कृपया देवनागरी लिपि के टङ्कण के लिए **Arial Unicode MS,** फॉण्ट साइज़ १२ एवं रोमन के लिए **Times New Roman** फॉण्ट साइज़ १२ का प्रयोग करें।

| संयोजक | समन्वयक | संगोष्ठी निदेशक |
|---|---|---|
| डॉ. अभय कुमार शाण्डिल्य (मो.-९८९१३२८०९०) | डॉ. जय प्रकाश नारायण | प्रो.गिरीश चन्द्र पन्त |
| डॉ. धनञ्जय मणि त्रिपाठी(मो.-९७९९२०२१७७) | | अध्यक्ष |

संस्कृत विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली ११० ०२५